राम होरी रहस्य।

अर्थात्

आनंदकंद भक्तवत्सल श्री रामचंद्र का

मिथिलापुर में होलिकाविनोद

प्रेमनिधान श्रीरामनाथ प्रधान कृत।

हिन्दी भाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास

के लिये क्षत्रिय-पत्रिकासम्पादक

श्री म० कु० बा० रामदीन सिंह द्वारा संगृहीत।

"खड्गविलास" प्रेस बांकीपुर।

साहिबप्रसाद सिंह ने छाप कर प्रकाशित किया।

१८९३.

प्रथम बार ५००

राम होरी रहस्य।

छन्द चौपैया।

जय गनेस गिरिजा महेस जै जै भारती भवानी। जै सिय राम भरत रिपुसूदन लखनलाल सुखदानी ॥ १ ॥ श्री गुरुदेव केसरीनन्दन जगबन्दन सब जानै। मैं प्रनऊँ तिन के पद पंकज जे प्रधान के प्रानै ॥ २ ॥ जे सरनाम महीपसुता सब परम सुन्दरी बामा। सीयस्वयंबर महँ सब आईं बसी जनक के धामा ॥ ३ ॥ अनुज सहित जब राजमहल को गवने अवधबिहारी। चौथीचार(१) करन हित सिगरी जुरि आईं सुकुमारी ॥ ४ ॥ देखि देखि दूलह की सुखमा सुखमा अंचल धारी। चकित छकित रहि गईं

(१) चौथी चार = विवाह गवन आदि के चौथे दिन का नेग का (चतुर्थी कर्म)।

रँगीली इक टक नैन निहारी ॥ ५ ॥ बोली सरहज सिद्धि(१) सलोनी सुनिये अवधबिहारी । ये सब होरी खेलन चाहैं तुम्हरे सँग सुकुमारी ॥ ६ ॥ अति अनुकूलीँ सुख रस फूलीँ भूलीँ पति पितु गेह । भईँ बिदेह गनैं न केहू भीजीँ आपु सनेह(२) ॥ ७ ॥ तुव छबि पागी अति अनुरागी लागी उर बिरहागी। मनसिज दागी भईँ बिरागी लोक लाज सब त्यागी ॥ ८ ॥ सुनि सिधि बैना करुनाऐना भरे प्रेम जल नैना । करत सचैना आलिनसैना (३) बोले राजिव-नैना ॥ ९ ॥ सुनु सुकुमारी प्रानपियारी जस अभिलाष तिहारी । तैसहि करिहैँ हुकुम न टरिहैं भरिहैं उर सुख भारी ॥ १० ॥

---

(१) सिद्धिकुमारी = रामचंद्र जी की सरहज का नाम जो लक्ष्मीनिधि की नारी है ।

(२) आपु सनेहू = आप के स्नेह में ।

(३) आलिन सैना = सखियों के समूह को वा सखियों को दृष्टि निक्षेप से।

ये सब भेली(१) रूप नवेली(२) राजकुँवरि अलबेली। भोरिन भेली मूठिन मेली खेलि है फागु गहेली(३) ॥११॥ इमि सुनि बानी राजकुँवर की सिद्धि कुँवरि धनि मानी। अति हिय हरखी दृग जल बरखी परखीप्रीति निदानी(४)॥१२॥जे अधिकारी (५) सखी पियारी तिनसों कह्यो हँकारी (६)। करहु तयारी रंगन ढारी खेलहिं अवधबिहारी॥१३॥ सुनि सिधि सासन(७) बदन बिकासन भरी हुलासन प्यारी। चहल पहल सब राजमहल में लागीं करन तयारी॥ १४ ॥ इत पूखन (८) कुल

---

(१) भेली = होनहार (नव वयस्का)।
(२) रूपनवेली = अपूर्व सुंदरतावाली ।
(३) गहेली = गहिरी (खूब)।
(४) निदानी = उत्कृष्ट (हद्द दरजे की)।
(५) अधिकारी = कार्याधिकारिणी।
(६) हँकारी = बुला कर।
(७) सासन = आज्ञा ।
(८) पूखन = सूर्य ।

भूषन रघुबर दूषन रहित रँगोले। अनुज सखन सों निज मत खोले बोले बयन रसीले ॥१५॥ ये सब गोरी राजकिसोरी भईं प्रीति बस बौरी। रूप अँजोरी (१) बड़ी लजोरी चाहहिं खेलन होरी॥१६॥ सुनि रघुबर के बचन रचन जुत अनुज सखा सुख साने। बारहि बार सराहत प्रभु को अति दयाल दिल जाने ॥ १७ ॥ देखि राम रुख लेखि महासुख गुनि बिसेषि ससुरारी। रिपुहन (२) तहँ सेवकन बोलि कै करन कह्यो तैयारी ॥१८॥ चन्दन चूरन केसरिपूरन धूरि कपूरन खासी। भौंडर (३) डारन लाल गुलालन फूलन मालन रासी ॥ १९ ॥ भरे कुमकुमा कंचन किस्तिन किंकर भिस्तिन भाये। पुहपनि छबियाँ बहु रँग दरियाँ

(१) अँजोरी = उज्वल।
(२) रिपुहन = शत्रुघ्न जी।
(३) भौंडर = अभ्रक (अब्रक)।

अति मन हरियाँ लाये ॥ २० ॥ मृदुल फुहारी फेकनवारी चुकै न जिन की धारी। मनिन सँवारी सुबरन ढारी आईं सुचि पिचकारी ॥ २१ ॥ लाख मजीठन पेमर पीठन गारि गारि बहु लीन्हे। जनक-महल के हौज हजारन रंगन ते भरि दीन्हे ॥ २२ ॥ बिपुल जनाने और मर-दाने आने बहु बिधि बागे(१)। सेवक होरी साज साजि कै विनय करी प्रभु आगे ॥२३॥ ऐसहि दुहु दिसि भई तयारी किमि बरनौं करतूती। जेती साज जुरी सब तेती नहिँ तिहुँलोक बिभूती (२) ॥२४॥ पीत पोसाक पहिरि रघुनन्दन भाइन सहित बिराजे। मनहुँ चारि फल धारि चारि तन जनक महल मधि भ्राजे ॥२५॥

---

(१) बागे = पोशाक।

(२) बिभूति (वि बहुत, भू होना) सम्पदा, ऐश्वर्य, सिद्धि, धन दौलत, सुख, समृद्धि आदि।

जे रघुबंसी सखा मनरखा(१) काकपखा(२) सिरधारे। चतुर चलाके कुसल कला के राम लला के प्यारे ॥२६॥ सील छमा के घर सुखमा(३) के प्रीति कृपा के पाके(४)। दबैं न दाँके(५) अभय सदाँ के बीर बराँके बाँके ॥२७॥ केलि कजाके(६) बड़े मजाके छबि छैला के छाके। बिपुल किता(७) के पहिरि पुसाके खड़े राम रुख ताके ॥२८॥ उत सब प्यारी राजकुमारी भूषन बसन सँवारी। करि मंजन मृदु अंजन आँजे खंजननैननिवारी ॥२९॥ कोउ दै चन्दन भरी अनन्दन बन्दन माँग सँवारी। काम कटक कतलाम(८) करन को मन-

---

(१) मनरखा = मन को प्रसन्न रखनेवाले।

(२) काकपखा = जुल्फ़।

(३) सुखमा = शोभा

(४) पाक्के = पक्के (पूरे)

(५) दां = दांव (अवसर।)

(६) कजाके = चतुर।

(७) किता = काट छांट।

(८) कतलाम = क़त्लेआम (जो सामने पड़े उसे मारडालना।)

हुँ कृपान (१) निकारी ॥३०॥ कसी कंचुकी लसी भुजन पर स्याम उरबसी (२) सोहै। मधुप उरोजन मानि सरोजन मधु खोजन जनु जोहै ॥३१॥ कोउ जरतारी पहिरि सुसारी करधारी पिचकारी। मनहुँ पीत पंकज लै दामिनि घन पै चहति सिधारी ॥३२॥ दंतन मीसी लसी बतीसी बिहँसत दीसी परती। हरि सुखदयनी कोकिलबयनी मृगनयनी मन हरती ॥३३॥ भरि भरि झोरी कर लै रोरी राजकिसोरी गोरी। ठाढ़ी भई सिढ़ि के आगे हरि सँग खेलन होरी ॥३४॥ सिढ़ि समीप महीपसुता सब चहुँदिसि मंडल कीन्हे। महल महोदधि(३) ते मनु निकसे कोटिन चंद नवीने ॥३५॥ राजकिसोरी सब झुक-

(१) कृपान = तलवार।

(२) उरबसी = हृदय पर का भूषण।

(३) महोदधि = महासमुद्र।

ठौरी देखि सिद्धि कर जोरी। खान पान बहु गुन बखान ते किय सनमान न थोरी ॥३६॥ पुनि तहँ सिद्धि कुँवरि बुलवाईं आईं गावन वारी। जिनकी तानैं परत सुकानैं सुरतिय मानैं हारी ॥३७॥ झांझ मृदंग संख सहनाई बीना बेनु सितारे। जल तरंग मुहचंग उपंगहु बाजे सब एक बारे॥३८॥ राम रिझावन काम जिआवन बाम सुगावन लागीं। सुनि तिय रंगी फागु उमंगी परी परी सी जागीं ॥३९॥ मृदु मुसकाय खाय मुख बीरी सखिन निकाय(१) निहारी। ठाढ़ि भईं होरी खेलन को लछिमीनिधि(२) की नारी॥४०॥ बोली चन्द्रकला(३) कमला(४) से तुम न रह्यो कोउ भोरी। ये नृप लालन मारि गुलालन गहि लै हैं बर जोरी ॥ ४१ ॥

---

(१) निकाय = समूह।
(२) लक्ष्मी निधी = जनक महाराज के पुत्र।
(३) चंद्रकला = सिधिकुमारी की छोटी बहिन।
(४) कमला = सखी का नाम।

दोहा—गोरी इकठौरी सबै, लै लै झोरी बाम।
आली ततकाली चली, जहँ बनमाली राम ॥ १ ॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचित रामहोरी रहस्य ग्रन्थे प्रथमो ऽध्याय ॥१॥

छन्द चौपैया।

इत रघुनन्दन अनुज लखनजुत सुन्यौ सिद्धि दिसि गानैं। सुघर सेवकन सपदि (१) बुलायो जे कलगान[२] सुजानै ॥१॥ मुरली मुहर मृदंग मँजीरन में मिलाय सुर दीने। दै दै तारिन गाइ धमारिन मतवारिन तिय कीने ॥२॥ बोले लखन सुनाय सखन सों हरि आये ससुरारी। ऐसो रचहु उपाय भाय तुम बात न जाय हमारी ॥ ३ ॥ ये सब गोरी राजकिसोरी रामहिं ओरी (३) धैहैं (४)। करि छल छन्दन बहु फर फन्दन रघुनन्दन गहि लैहैं ॥४॥ राम अदूषन सब गुन भूषन

(१) सपदि = शीघ्र।
[२] कलगान = उत्तम गाना।
(३) ओरी = तरफ़।
(४) धैहैं = दौड़ैंगी।

पै यक दूषन भाई। जो कोइ प्रीति करै इन के संग तिहिकर[१]जांहिं बिकाई॥५॥ कौनहु मिस कौनहु संजोग ते जे इन पर अनुरागैं। तिन के काज समाज राज सब आपन सरबस त्यागैं॥६॥ दोषहु जानत पै नहिं मानत गुनहि बखानत ताको। एकहि भाव रहैं सबही सों राउ होइ की रांको (२)॥७॥ आपनि जीति अजीति न गनिहैं प्रीति रीतिमग जैहैं। बीसबिसे बनितन[३] बस ह्वैहैं कहँलगि इन्हैं बचैहैं॥८॥ तातें वहि दिसि रहौ सखा सब इत हम तीनहु भैया। खेलिहैं मधि महँ राखि राम कहँ करिहैं काह लुगैया॥ ९॥ सुनि इमि लखन लाल के बैना बिहँसे राजिवनैना। मन्द मन्द गवने गयन्द गति रामचन्द्र सुखऐना॥१०॥

---

[१] तिहि कर=उसके हाथ।

(२) रांको=रंक (दरिद्र)।

[३] बनितन=स्त्रियों के।

चलत राम के सखा अनुज मिलि मंडल बांधि सिधाये। अति हुलसे बिलसे दिल से सब रहसि रहसि[१] तहं आये ॥११॥ उत सुन्दरी घमराड भरी सब मद्धि सिद्धि करि भाई (२)। दमकि दमकि दामिनि सी कामिनि गजगामिनि उठि धाईं ॥१२॥ चंचल नैनो चितवनि पैनी मुद दैनी पिकबैनी। ऋषिन रमैनी(३) रूप रिझैनी मैनी(४) दरप दरैनी[५] ॥१३॥ लिये गुलाल उताल[६] बाल जब लाल समीप सिधारी। चितै रहीं मुखचंद राम को तन मन जोबनवारी ॥१४॥ हाथ बहै ना मूठि चलै ना आगे पांव परै ना। राम कुँवर जब सिद्धि कुँवरि के जुरे

---

[१] रहसि = प्रसन्नता पूर्वक।

[२] भाई = रुचि कारिणी।

(३) रमैनी = मोहनेवाली।

(४) मैनी = कामदेव की स्त्री (रति।)

[५] दरपदरैनी = अहंकार मिटाने वाली।

[६] उताल = शीघ्र।

जौहरी (१) नैना ॥ १५ ॥ पाग पतंगी रंगहि रंगी बँधी सुढंगी माथे। ललित कलंगी झुकी त्रिभंगी मनि बहु रंगी गाथे ॥१६॥ अलक अमोलैं चिक्कन लोलैं (२)डोलैं अमल कपोलैं। मनहु मुकुर मंडल के भीतर अहिसिसु(३) करत कलोलैं ॥ १७ ॥ कानन मोती जगमग जोती अतिसै होती(४) सोभा। जग दिलदारन देखि कुमारन सुरदारन(५) मन लोभा ॥ १८ ॥ भृकुटि चढ़ी हैं सुछबि मढ़ी हैं मारन मंत्र पढ़ी हैं। काम गढ़ी हैं बाढ़ बढ़ी हैं मनहु कृपान कढ़ी हैं॥१९॥ दृगनि ललोहैं (६) अति से सोहैं जब

---

(१) जौहरी = जौहर करनेवाले (जीव हरनेवाले शुद्ध शब्द जिवहर है) वा रत्नमय (श्रेष्ठता पूर्ण)।

(२) लोल = चंचल।

(३) अहिसिसु = सांप के बच्चे।

(४) होती = होनहार।

(५) दारन = स्त्रियों का।

(६) ललो हैं = कुछ ललाई लिए हुए।

जोहैं[१]तिरछो हैं। मुनिमन मोहैं कामिनि को हैं कामहु को चित पोहैं॥२०॥ सुखमा सदन बदन रघुबर को कदन(२) मदन मदरासी (३)। मंद हँसनि की लसनि बिराजी तियन फँसनि को फाँसी ॥२१॥ केसरितिलकैं भालनि झलकैं ललकैं (४) रमहु (५) निहारी। सुभग (६) नासिका अति प्रकासिका कीर हीसिकाकारी (७) ॥२२॥ अरुन अधर दल दर बिम्बाफल मधि मोती भल राजै॥ सज्जन श्रेनी बांछित देनी मनहु त्रिवेनी छाजै ॥२३॥ गसी पाग ते धसी चिबुक लौं कसी लसी उर माली। मनु उरबसी ससीमुख चूमति गुनि

(१) जोहैं = देखते हैं।

(२) कदन = नाश करनेवाला।

(३) मदरासी = अहंकार का समूह।

(४) ललकैं = ललचाती हैं।

(५) रमहु = लक्ष्मी भी।

(६) सुभग = अच्छी शोभावाली॥

(७) कीर हासिका कारी = तोते की हँसी (निंदा) करनेवाली।

अमिरसी [१] बिसाली ॥२४॥ कठुला ललित कलित कल कंठनि बलित [२] रतन बहु भाँती। उर बिसाल मनिमाल मनोहर मनु रबि बाल जमाती(३) ॥२५॥ बलनि अथाहैं बिन उपमा हैं भूषन भूखित वा हैं। जेहि तजि नाहैं (४) मिलन उछाहैं चाहैं मुनिहुं सुता हैं ॥२६॥ अरुन अंगुरिन मनिन मुंदरी परम सुंदरी लागैं। तिमि नख पाँती दुरि (५) दरसाती सब भाँती मति पागैं ॥२७॥ तन घन स्याम छाम (६) कल (७) कंचुक [८] अति अभिराम प्रकासे। मनु चन्दिर (९)

(१) अमीरसि = स्वादिष्ट(अमृत पूर्ण।)
(२) बलित = युक्त।
(३) जमाती = समूह।
(४) नाहैं = पति को।
(५) दुरी = छिप कर।
(६) छाम = बारीक (महीन)।
(७) कल = उत्तम।
(८) कंचुक = अंगरखा।
(९) चंदिर = स्वच्छ।

मनि मन्दिर भीतर बैठि मनोज सुभासै ॥ २८॥ उदर उदार गँभीर नाभिथल सुधाकुंड अनुहारी। जिन के दरस परस करिबे को तरसहिं राजकुमारी ॥ २९॥ जरकस (१) फेंटे कमर लपेटे राज दुलहेटे बेटे। जनु बिन भेंट तलफत पेटे (२) घन दामिनी समेटे ॥ ३०॥ कटि चौरासी(३) अति रुचिरासी(४) भासी पटिक (५) प्रकासी। जेहि धुनि खासी केलि हुलासी कानन परति सुधासी ॥३१॥ सरही सहित कन्ध जुग सोहत जोहत मोहत मन को। नूपुर कलित ललित पद देखे रहत सँभार न तन को॥ ३२॥ दहिने हाथ कुमकुमा लोहे बाम हाथ पिचकारी। हँसि हँसि बातैं करत

(१) जरकस (ज़रकश) सोने के तार के कामवाले।
(२) पेटे = मन में।
(३) चौरासी = क्षुद्र घंटिका।
(४) रुचिरासी = शोभा के समूहवाली।
(५) पटिक = हीरा।

सखन सों आनंद कन्द बिहारी ॥३३॥ झूमि रघुबंसी कुँवर जसीले चारिहु छैल छबीले। गुन गर बीले रूप रँगीले सहजीले सुभ सीले ॥३४॥ नैन रसीले मैन मदीले (१) बोले बयन मजीले(२)। अति दरसीले सभा दरीले(३) मृदु जोवन जरबीले(४) ॥३५॥ अस सुखमा लखि राम कुंवर की सिद्धि कुंवरि बौरानी। सन्मुख ठाढ़ि चकित सी चितवै हरि के हाथबिकानी ॥३६॥ सब सुकुमारी राजकुमारी बूड़ि गईं बिन पानी। को हम कौन कहाँ रहती हैं सुधि तजि भईं दिवानी ॥३७॥ लखि दूलह दिलदार दुलारो अबही मुह मसि भींजी। ऊभि ऊभि लै सांस सुन्दरी पछिताती कर मींजी ॥ ३८ ॥

---

(१) मदीले = मतवाले।

(२) मजीले = मँजेहुए (स्वच्छ)

(३) दरीले = प्रतिष्ठित।

(४) जरबीले = दमक वाले ।

दोहा।

अनब्याही आसा परीं, ब्याही परीं खँभारि (१)।
गौने की मौने रहीं, रघुबर रूप निहारि ॥ २ ॥

इति श्री रामनाथप्रधान विरचित रामहोरीरहस्य ग्रंथे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

छन्द चौपैया।

धरि धीरज तहँ सिद्धि अमोली मृदु बोली हँसि बोली। हारि निहारि डारि टोना कछु लाल करीं तिय भोली ॥१॥ तुम रघुनन्दन बन्दन [२] लायक मुद-दायक अभिरामा। अंचलओट दृगंचल चोटैं करि हैं चंचल बामा ॥२॥ सरल [३] रह्यो वह सम्भुसरासन ललनदलन [४] जेहि कीन्हो। भौंह कमान कठोर तियन के तकत करत बलहीनो ॥३॥ बड़े बड़े प्रबलन तुम जीते करि छल बल बहु भाँती। अबलन जीतब कठिन लाड़िले

(१) खँभारि = घबराहट।

(२) वंदन = स्तुति।

(३) सरल = कोमल॥

(४) दलन = खंडन।

जब लगि हैं दै छाती ॥४॥ सुनि सरहज
के बचन सलोने अति रसमय रँगभीने।
मृदु मुसकाय चाय [१] भरि रघुबर
बोले प्रेम प्रवीने ॥५॥ जौने भौंह धनुष
मिलिबे हित सिवधनु किय टुइ टूका।
तन बल रहै कि जाय पियारी तामें परी
न चूका ॥६॥ बड़े बड़े बीरन जो जीते
तदपि नहीं सुख पाये। ललित लड़ाई
लेन लाड़िली तुम्हरे महल सिधाये ॥७॥
परम पियारे संभु हमारे जो तुव उर
दरसै हैं। तौ करकमल चढ़ाय लाड़िली
करि प्रसन्न बर लैहैं ॥८॥ रघुनन्दन के
बचन श्रवणसुनि सिद्धि कुँवरि मुसकानी।
बोली चन्द्रकला तेहि औसर परमचतुर
मृदुबानी ॥९॥ लखनलाल यहि काल न
बोलहु कैसे रहे चुपाई। कौविन काबू
देखि कामिनी हिय में गए डेराई ॥१०॥

---

(१) चाय (चाव) = उमंग।

लखन कह्यौ हँसि सुनहु सलोनी चन्द्र-
कला तुव नामा। हम चकोर रस चाखन
चाहैं डर को कछू न कामा ॥ ११ ॥ जे
बिन काबू अहैं कामिनी जाहि पुरुष सब
हारे। तिनहिं भोग के जोग लाड़िली अहैं
महेस हमारे ॥१२॥ सुनि इमि लखन
लाल के बयना चन्द्रकला सकुचानी।
कुसल कला बिमलादिक चंचल अंचल
दै मुसक्यानी ॥१३॥ बोली कमला सुनहु
भरत जू कैसे आपु भुलाने। कहाँ
परे बनितामंडल में तुम तो साधु
सयाने ॥१४॥ धरि मृगछाला लैकर माला
जपौ इकन्तहि जाई। नहिं तो घेरिघेरि
सब भामिनि करिहैं निज मन भाई
॥१५॥ भरत कह्यौ तुमही भूलति हौ
हम तो नहीँ भुलाने। बड़ बिरागी सुनि
बिदेह को तिन घर कीन पयाने ॥१६॥
हम तुम बैठि इकन्तहि प्यारी आसन

उचित जगैहैं । तुम्हरे उरहि राखि कर माला जपि जपि रैन बितैहैं ॥१७॥ सुनत भरत के बचन रँगीले कमला मुरि मुसकानी । चन्द्रवती अतिचंचल ननी बोली सुन्दर बानी ॥ १८ ॥ सतुसाल तुम बाल [१] बहुत हौ लोकहवाल न जानौ । काह बिचारि महल में आये हम से सकल बखानौ ॥१९॥ कै भाइन के अहौ भरोसे कै अपनी मजबूती । अली मंडली बली सबै विधि चली [२] न कछु करतूती ॥२०॥ रिपुसूदन कहि सुनहु सलोनी साँचअहैं हम बाले । यहै बिचारि महल मैं आये सीखन लोकहवाले ॥ २१ ॥ धनुसवेद भाइन सों सीखे अरु रन की मजबूती । तुम्हरे पास पढ़न अब आये कामकेलिकरतूती ॥२२॥

---

(१) बाल = बालक ।

(२) चली = चलैगी ॥

चन्द्रवती सुनि वचन चातुरी चुप ह्वै रहीनिहारी। तेहि औसर यक सखा कुमकुमा लै कपोल तकि मारी ॥२३॥ लखि तेहि कोरी राजकिसोरी लै झोरी उठि दौरी। मूठिन चपल गुलाल चला-वत घेरि लियो चहुँओरी ॥२४॥ लल-कार्‌यो पुनि लखन सखन प्रति बहु कुम-कुमनि पँवारे [१]। कोउ के भुज कोउ के कपोल तकि कोउ के कुचबिच मारे ॥२५॥ मूठिन प्रति मूठिन चलाइकै चमकैं चपलकुमारी। चहल पहल भो राजमहल में मची अबिर अँधियारी ॥२६॥ हो हो होरी हो हो होरी बोलहिं हो हो होरी। गावनवारी गावन लागीं दै दै हाथ थपोरी ॥२७॥ निरखन आईं नगरनागरी ते चढ़ि सबै अटारी। लखि लखि कौतुक छज्जन छाँड़ै केसरिरँग

(१) पँवारे = फेंके।

पिचकारी ॥ २८ ॥ राजकुँवर कुमकुमा चलावैं पिचकारी सुकुमारी। निजपर [१] लखि न परै काहू को मची धूम धुँधकारी ॥२९॥ अबिर अँधेरी घिरी घनेरी कोउ न परत तहँ हेरी। रंगनिसानी धुन्धपटानो [२] दरशी कछुक उजेरी ॥३०॥ तब रघुनन्दन सिङ्गिवदन महँ दौरि मली मृदु रोरी। सोउ अति चपल लपटि लालन के गाल गुलाल मलोरी ॥३१॥ भीजे पागे लटपट बागे लपटि सुअंगन लागे। रँगीँ अबीर अनोखी अलकैँ हलकैँ कुंडल आगे ॥३२॥ परसि कपोल अमोल राम को प्रेममगन भइ प्यारी। बार बार पटासों मुख पोंछत करति प्रान बलिहारी ॥३३॥ लखि प्रसन्न मुख पान खवावति सरहज प्रानपियारी। मुँदरी की आरसी देखावति बिहसत अवधबिहारी ॥३४॥

---

(१) निज पर = अपना पराया ।

(२) पटानी = मिटी ।

निमि [१] कुल भटू [२] लटू [३] लालन पर लाज न सकति सँभारी। सरकि परी कुचकसी कंचुकी खसी सिथिल तनसारी ॥ ३५ ॥ सब सुकुमारी राजकुमारी तेहि छन नेह निहारी। भरीसनेह कहन मृदु लागीं बातें प्रेम-पियारी ॥ ३६ ॥ जैसे नेह निपुन नटनागर रघुनन्दन ननदोई। तैसि हि सरहज सिद्धि सलोनी अस न दुतिय[४] जग होई ॥ ३७ ॥

दोहा—असकहि हेली (५) चुप रही, मेली मूठि गुलाल।
खेली खेली कहि भिरीं, अलवेली तेहि काल ॥३॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते रामहोरीरहस्य ग्रन्थे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

—०—

(१) निमि = जनक जी के एक पुरखा।
(२) भटू = प्रतिष्ठिता स्त्री।
(३) लटू = मोहित।
(४) दुतिय = द्वितीय।
(५) हेली = चतुरा स्त्री।

छन्द चौपैया।

लखनलला पुनि चँद्रकला मुख तकि मारी पिचकारी। घूँघुटओट बचाय चोट सों गह्यौ ललै ललकारी ॥१॥ ललित कपोलन मलि गुलाल मृदु सन्मुख रह्यो निहारी। लखन लला अरु चन्द्रकला के भे चकोरचख (१) चारी ॥२॥ फेरि कमल सनमुख कमला को ताकि भरत तेहि पाहीं (२)। लै कर कमल कमल से कुमकुम हन्यौ कमल कुच माहीं ॥३॥ सोउ अतिचपल नचाय भौँह जुग गही भरतभुज जाई। स्याम सरीर नीर केसरि को सींच्यौ अति सुख पाई ॥४॥ चन्द्रवती मुखचन्द चितै पुनि रिपुहन परमखेलारी। झपटि लपटि रोरी मुख मींजी कर

---

[१] चख (चक्षु) नेत्र।

[२] पाहीं = पास।

नहिँ छाँड्यो प्यारी ॥५॥ सोउ चित चंचल चलन चातुरी करि आतुरी नवेली। रिपुसूदनदृग अंजन दीन्हो मलि कपोल अलबेली ॥६॥ इत रघुबर के सखा छबीले उत सब राजकुमारी। अबिर गुलाल रंग पिचकारिन मची महल में रारी (१) ॥ ७ ॥ हेलमेल सों भेलपेल सो खेलैं खेल खिलारी। नेक न रुकैं चुकैं नहिँ मूठी करहिँ मारु पर मारी॥८॥ तेहि अवसर जहँ मनिन-महल में राजति जनककिसोरी। देखत भुँकी भरोखन लागी राम कुंवर की होरी ॥ ९ ॥ पीयप्रान की प्रान जानकी सखी एक पठवाई॥ रूप सील सब भाँति सलोनी जहाँ सिद्धि भौजाई ॥१०॥ आइ सखी कह सिद्धिकान में सीयसंदेस सप्रीती। राजकुँवर ये चतुर

(१) रारि—लड़ाई ।

खिलारी जामें जाहिं न जीतो ॥ ११ ॥
हम परबस सरबस तुम ही लगि होरी
खेल हुलासू । को करि है तुम ही बिन
प्यारी मम हिय कमल बिकासू ॥ १२ ॥
अस कहि सखी सिधारी सियपहँ सुनत
सिद्धि अनुरागीं । ललकारयो पुनि ललिन
लाड़िली ते खुलि खेलन लागीं ॥ १३ ॥
एक एक गोरी सौ सौ झोरी मूठि करो-
रिन मारी । को केहि बूझै नेक न सूझै
अस छाई अँधियारी ॥१४॥ रामचन्द्रमुख
चन्द्रचंद्रिका (१)तऊ न छिपी छिपाई ।
मनो सांझ सावन घनभीतर जागी
जोतिजुन्हाई ॥ १५ ॥ सिद्धि कुँवरि तब
रामकुँवर को लियो तुरत पहिचानी ।
चूमि कपोल अमोल महल में गइ लेवाय
गहिपानी (२) ॥१६॥ सारी सुभग ओढ़ाय

---

(१) चंद्रिका = चांदनी (चमक)।
(२) पानी (पाणि) = हाथ।

राम को घूंघट दियो बनाई । सियसमीप बैठाय सलोनी बोली बात छिपाई ॥१७॥ सीय नई दुलही उपही (१) एक काहू सों न चिन्हारी । होरी कौतुक देखन आई भूलि परी इत प्यारी ॥ १८ ॥ बड़ी लजोरि (२) न घूंघट खोलै बोलै तहं सकुचाई । राखेहु अपने पास लाड़िली नहिं कहुँ जाइ भुलाई ॥१९॥ अस कहि सिद्धि गई मंडल में जहँ सब खेलहिँ होरी । भरत लखन रिपुदमन सखन सब कोउ न लखी यह चोरी ॥ २० ॥ उत सिय की एक सखी सयानी सो दुलही पहिचानी । सैनहि दियो बुझाय सिया को सीय सकुचि मुसकानी ॥२१॥ पुनि सखि चतुर चितै दुलही मुख बोली मधुरी बानी । जानि परहु कोउ बड़े

---

(१) उपही = विदेशिनी ।
(२) लजोरी = लाजभरी ।

बंस की छल करि अहौ छिपानी ॥२२॥ बारीबयस साँवली सूरति मूरति अति मनहारी। गुनियतु(१) याते निज प्रीतम को ह्वै हौ बहुत पियारी ॥ २३ ॥ कौन गाँव की अहौ सुवासिनि (२) कौन गाँव ससुरारी। कौन भाँति ते कहौ सलोनी सिधिसँग भई चिन्हारी ॥ २४ ॥ सुनि दुलही सखिबचन व्यंगजुत बोली मृदु मुसकाई। कौसलपुर की अहौं सुबासिनि इत सासुर सुखदाई ॥ २५ ॥ तुम्हरे वर एक सुघर छबीली तासों मोरि मिताई। मिलन चाह मम चरचि सहेली सिद्धि दीन्ह पहुँचाई ॥ २६ ॥ सुनि दुलही की बात रँगीली प्रेम प्रीति रससानी। सीय सहित सब सखी मंडली बिनही मोल बिकानी॥२७॥ इत दै तारी गावहिंगारी

---

(१) गुनियतु = हम समझती हैं।

(२) सुवासिनि = कन्या।

रस मतवारी सारी। कुम कुम छूटैं लगि अँग फूटैं अति सुख लूटैं प्यारी ॥२८॥ सनी सनेह सुधि नहिं केह भईं बिदेह बाला। भूषण जाला रतन प्रवाला बिथुरीं मोतिनमाला ॥२९॥ चौकन पाहीं ते चमकाहीं गड़े गुलालन माहीं। को केहि लखै (१) कौन सखै को दखै तिन पाहीं ॥३०॥ पुनि पिचकारी अमित पँवारी तैसहि बही बयारी। सबहु कुमारी भये सुखारी मिटि अबीर अँधियारी ॥३१॥ मूठिन रोकी रहे बिलोकी दोउ दिसि अमित खेलारी। जिमि पलास फूली फुलवारी तिमि बिलसे नर नारी ॥३२॥ कोउ मुख पोंछैं अंग अँगोछैं कहत परोछैं (२) बैना। कोउ पट झारैं अलक सँवारैं गोरे रंग सचैना ॥३३॥ छापर में छति में

(१) लखै = पहिचानै।

(२) परोछैं = (परोच) सामने न करके।

छातन में छज्जन छोरन माहीं । गलित गुलालन महल मनिन के लाल बाल दरसाहीं ॥ ३४ ॥ सिद्धि कह्यो सब राज-कुमारिनि बन्द करो अब होरी । करहु न बारी भो श्रम भारी सब मनकाम(१)फलो-री ॥ ३५ ॥ जस जिय जाकी गति मनसा की तसि ताकी मति पाकि । नृपन सुता की मौज मजा की रही न अब कछु बाकी ॥ ३६ ॥

दोहा—लखनलाल सब को लख्यो, अनुजन सखन समाज ।
रघुनन्दन को नहिं लख्यो, जे रघुकुल सिरताज ॥ ४ ॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते रामहोरीरहस्य ग्रन्थे चतुर्थो ऽध्यायः ॥ ४ ॥

छन्द चौपैया ।

हिये अचैन नयन जल रोकत लखन कहे तहँ बयना । कहहु सखहु तुम्हरी समाज ते कहँ गये राजिवनयना ॥ १ ॥ हम तुम रहे साथ ही भैया कब गवने (२) रघुराई । अबिर अँधेरी के अंतर में कै कोइ गयो लिवाई ॥ २ ॥ प्रथमहि ते

---

(१) मनकाम = मनोरथ ।

(२) गवने = चले गए ।

यहि सोच हमारे लखि अस राम सुभाऊ। निरखि नेह निज देह बिसारत गनत न दाँउ कुदाँऊ ॥३॥ भरत कही यह बाल-पने ते जानी रीति हमारी। औगुन सिंधु जो होइ सनेही तऊ न त्यागहिं यारी ॥४॥ सरबसु दै परबसु ह्वै नाचत तहु पै करत गलानै(१)। तौलौ मोदन मानत रघुबर जौलौ देत न प्रानै ॥५॥ तेहि ते लखन चखन(२) जल रोकहु सखन सहित तहँ जाई। सुख सों ह्वै हैं सिद्धिमहल में बीसबिसे रघुराई ॥ ६ ॥ अस कहि भरत सिद्धि सखियनजुत सखन सहित इक ठौरी। तुरत सिधारे सीयमहल में खोजन हित निज चोरी ॥७॥ सब ते पहिले सिद्धि सिधारी जहँ श्री जनक-दुलारी। मधि में पट परदा कर दीन्ही

(१) गलानै (ग्लानिही) संकोच।

(२) चखन = नैनों का।

बाहेर अवधबिहारी ॥८॥ गोल कपोल पोंछि अंचल ते ऐंचि लई तन सारी। भूषन बसन साजि बैठायो पान खवायो प्यारी ॥९॥ तेहि छन गये भरत रिपुसूदन लखन सखनसँग ठाने। रामचंद्र मुखचन्द चितै कै नैनचकोर जुड़ाने॥१०॥ सहित सनेह सकोच सकुच भरि लखन कहे तहँ बैना। केहि के सफल नैन करिबे को प्रभु आये यहि ऐना(१) ॥११॥ एक सखा कह सुनहु साँवरे तुम तो सरल सुभाये। तजि निज मेले आपु अकेले अलबेले कित आये ॥१२॥ तुम्हरी सहज सिद्धि सलोनीभलो रची यह होरी। नीतिनिपुन निमिबंश नृपति घर नई टीख हम चोरी॥१३॥ बोल्यो अपर सखा तेहि औसर सुनिये अवधबिहारी। हम सब सखन सिखापन दीन्हीं यहै चाल

(१) ऐना (अयन) = घर।

अब धारी ॥ १४ ॥ एक सखी कह तुम नहिँ जानहु हरि आये ससुरारी । हमरी दीठि बचाय साँवरे कौन नहूँ कहुँ यारी ॥ १५ ॥ बिन बोले नहिँ जात काहु के हरि सुभाव अजमायो (१) । गुनियतु याते आजु महल में कोउ करि प्रीति बुलायो ॥१६॥ यह सुनि चतुर सखी इक बोली सिय की रुखअनुसारी । सुनहु सखहु जेहि हित इत आये आनन्दकन्द बिहारी ॥ १७॥ जो कोउ पीछे छिपत सिया के आपनि हारि निहारी । निमिकुल की यह रीति सदा की करहिं तासु रखवारी ॥१८॥ जाकी लगन लगी काहू सोँ सो नहिँ चहत बलाऊ । तासु पास अनयास जात सो गनत न भाउ कुभाऊ ॥ १९ ॥ ये रघुनन्दन मुनिमनफ-

(१) अजमायो = आज़माया हुआ ।

न्दन (१) हैं बिनु हेतु सनेही। जे जस हिलत मिलत तस तेही किये अचल प्रन येही ॥२०॥ मीत के मान मान निज मानत मीत अमान अमानी। जाति कुजाति सुजाति न भावत रावत नेह निसानी ॥२१॥ सपनेहु निज स्वारथ नहि चाहत नेह निबाहत नीके। अति सुख पावत तन बिसरावत गुन गावत प्रेमी के॥ २२॥ रघुनन्दन गुन सुनत सखीसुख हरषि लखन कहि बानी। तुम बिनु कौन कहै अस सुन्दरि सिय की सखी सयानी ॥२३॥ लखन कह्यौ पुनि सिद्धि कुँवरि ते तुम सब बिधि सुख दाई। देहु रजाय (२) करहिँ अब मज्जन सखनसहित रघुराई ॥२४॥ सिद्धि कह्यौ फगुवा बिनु दीन्हे नहि मनिहैँ सुकुमारी।

---

(१) फंदन = फंदाने (फँसाने) वाले।

(२) रजाय = आज्ञा।

सुनि सरहज के बचन रँगीले बोले राम बिहारी ॥२५॥ यह सब राज समाज साजजुत हम तुम्हार बदि प्यारी। भूषन बसन बात यह केती लेहिँ सबै सुकुमारी ॥२६॥ अस कहि नैन सैन दिय रघुबर सखन सचैन सुहाये। बिबिधि निचोल (१) अमोल अभूषन बहुत निडोल (२) मँगाये ॥ २७ ॥ बिपुल रंग जरतारी सारी तापर लगी किनारी। बहु मनिमाले हीरन जाले रतन प्रवाले भारी ॥२८॥ यह सब संपति साज सुहावनि सेवक सुघर नवीने। जानि रामरुख सिद्धि कुँवरि के सब समीप धरि दीने ॥ २९ ॥ लखि सुभ सम्पति सिद्धि सलोनी यथा उचित अनुहारी। राजकुमारिन सब प्यारिन प्रति पठई सकल

(१) निचोल = सिले हुए वस्त्र।

(२) निडोल = पुष्ट।

सुखारी ॥ ३० ॥ तेहि औसर सिरताज तियन की जनक राज की रानी। नाम सुनैना सब गुनऐना रूप सील सुखदानी ॥३१॥ एक सखी तहँ तुरत पठाई जहँ श्री निधि की प्यारी। बोली अस रजाय रानी की सुनहु सिद्धि सुकुमारी ॥३२॥ चारिहु कुँवर तुरत नहवाओ भो अब बहुत प्रयासू(१)। सुख सों सुंदर असन (२) करावो सखनसहित सहुलासू ॥३३॥ अस कहि सखी गई रानी पहँ सिद्धि सुनत सुख पाई। दोउ करकमल जोरि रघुबर सों बोली मृदु मुसकाई ॥ ३४ ॥ अब रघुनन्दन मज्जन कीजै बंधुन सहित बिहारी। कीजै मधुर असन महलन में कुलपति सासु तिहारी ॥३५॥ यह सुनि तुरत उठे रघुनन्दन अनुज सखन जुत प्यारे। सुरभि[३]सलिल महँ मज्जनकरि

(१) प्रयासू = परिश्रम।
(२) असन = भोजन।
(३) सुरभि = सुगंधित जल।

करि सासु समीप सिधारे ॥३६॥ उत सब प्यारी राजकुमारी सिद्धिसमेत सुखारी। करि मज्जन सोइ भूषन सारी पहिरि पहिरि सुकुमारी ॥३७॥ फागु समय की जौन पोशाकैं तिय अरु रुपुष उतारे। ते सब दासी दास पाय कै पुनि नहि पानि पसारे ॥ ३८ ॥

दोहा—गये सुनैना महल महँ, चारिहु राजकुमार।
हरषि उठी रनिवास सब, मानि हुलास अपार ॥५॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते रामहोरी रहस्य ग्रन्थे पंचमो ऽध्यायः ।५॥

छन्द चतुष्पदी।

सुभग सिँहासन दिये सुआसन अति मोदित (१) रनिवासू। बार बार पट भूषन वारति लेहि बलइयाँ सासू ॥१॥ पीत पुनीत उपरना (२) ओढ़े मनि-भूषन अँगधारे। ललित कोय कजरारी अँखियाँ हठि मन हरत निहारे ॥२॥ राजिव नैना अतिछबि ऐना देखि सुनैना

(१) मोदित = आनंदित।
(२) उपरना = दुपट्टा।

नैना। लहि चितचैना पलक खुलैना श्रवन सुनै ना बैना ॥३॥ लखि मृदु मूरति साँवलि सूरति रही बिसूरति रानी। कर टन तूरति सेदन (१) पूरति दृग दूरति [२] मुदपानी ॥४॥ को हम कौन कौन कित ठाढ़ी को आयो हम पाहीं। यह सुधि तहँ न तनक रानी को देखि राम मुसक्याहीं ॥५॥ चतुर सखी बोली तहँ बानी काह करहु महरानी। चारिहु कुँवर निकट तुव बैठे तुम किहि रंग भुलानी ॥६॥ चरन धुवावहु असन करावहु भयो बहुत अतिकाला। आपु सनेह सकोच सकुचि कै कहि न सकत नृपलाला ॥७॥ सुनि सखिबचन तुरत तहँ गवनो लैकर सीतल पानी। चारिहु भाइन के पदपंकज धोये अपने पानी ॥८॥

---

(१) सेद (श्वेद) = पसीना।

(२) दूरति = गिराती है।

पुनि थारिन महँ बहु प्रकार के व्यञ्जन परुसन लागीं। जेंवत जानि सखनजुत रामैं बोलीं अति सुख पागीं ॥९॥ कहहु तात होरी किमि खेले किहि बिधि भयौ हुलासू। बार हि बार दुलारि राम कों पूंछहि सब रनिबासू ॥१०॥ उतर न देत सकुचि रघुनन्दन लखन कह्यौ तब बैना। होरीसुख रावरे महल को दवहु बरनि सकै ना ॥११॥ जेंइ अँचै बीरा मुख दीन्हे सेवक दई पुसाकैं। पहिरैं चारिहु कुंवर रँगीले छैलछबीले बाँके ॥१२॥ सखन सहित सिरनाय सासुपद पाय असीस बहोरी। हरषित आये सिद्धिमहल में जहँ सब राजकिसोरी ॥१३॥ सब सुकुमारी सिद्धि कुमारी देखि उठीं मुद बाढ़ी। मनौ चंद को चाहि चकोरी मिलन हेत भइँ ठाढ़ी ॥१४॥ दरसैं बिबिधि भाँति की फरसैं तरसैं देव निहारी। चमकहिं

चौकन चारु चाँदनी चंदचाँदनीवारी ॥
१५॥ रतन जड़ित बर चारि सिँहासन
गद्दी गिलिम बिछाये। भाइन सहित
राम तहँ राजे सखा दहिन दिसि भाये
॥१६॥ बाँये दिसि बैठीँ सुकुमारी भूषन
बसन सँवारी। प्रीतिप्रवीनी बैस नवीनी
खीनी कटि मनहारी ॥१७॥ श्रीनिधि
प्यारी परम दुलारी रूप रसिकरिझवारी।
रामकुँवर के अति ढिग बैठी प्रभु पद
गोदहि धारी ॥१८॥ चमर चलावति
पान खवावति मुखरुख ताकति प्यारी।
तन मन धन जोबन निज सरबस दियो
राम पर वारी ॥१९॥ कोइ दरपन दर-
सावन लागीं रामकुँवरमन हरती।
आनन ढिग निज आनन राखी सानन
बातें करती ॥२०॥ कोउ लाड़िली माल-
तीमाला मेलि धरी उर माही। राम
कुँवर अँग परस पायकै पुनि कर टारति

नाही ॥२१॥ कोउ फूलन की रचि बाजू बन्द बाँधि बाहु में दीन्ही। मनु भेटन को निज बदि (१) कै कै प्रमुदित भई नवीनी ॥२२॥ यहि बिधि राजकुमारि भावना जदपि करीं बहु भाँती। राम-प्रेम की परम पियासी तदपि अघाति न छाती ॥२३॥ पुनि नाचन अरु गावन बारी आई सभा मँझारी। नाचन लगीं राम के आगे बहु प्रकार गति धारी॥ २४॥ कोउ लै ताने बहु गति ठाने हरि दिसि देत सुमाने। मेलत सुर सारँगी सितारन बिलग न कोउ पहिचाने॥२५॥ बाँह उचाय लचाय लंक निज नैन नचाय निहारी। रामहि भाव देखावत साँचहि नाचहि नाचनवारी ॥ २६ ॥ कोउ करि गाने मधुर महाने तानति तानैं भारी। जेहि सुर सुनत छकत

(१) बदी=एवज़ी ।

कल कोकिल का बपुरे नर नारी ॥२७॥
रघुनन्दन तहँ अनुज सखनजुत रीझि २
बहु वारैं । धन मन मोतिन माल हजा-
रन दिये इनाम अपारैं ॥ २८ ॥ सिद्धि
आदि सब राजकुमारी तेउ अति भईं
सुखारी । सुनि मृदु गान महान मोद
लहि दीन्हे भूषन सारी ॥ २९ ॥ यहि
बिधि रामसमाज साज लै सखन समेत
बिराजैं । मच्यौ मोद मिथिलेस महल में
द्वारन नौबति बाजैं ॥३०॥ अनुज सखा
नृपसुता सिद्धि के पद पंकज मन वारौं ।
बार बार तिन के चरनन की धूरि सीस
निज धारौं ॥३१॥ रामसनेहिन के समाज
महँ मांगौं बर यहि रीती । रामनाथ
परधान पतित को बढ़ै रामपदप्रीति ३२॥
निज निज कविता के गुमान ते कवि
बहु ग्रन्थ बनावैं । बिन हरिप्रेम साधु
नहि गावैं जद्यपि बहुत चलावैं ॥ ३३ ॥

जिन को प्रेम रामपदपंकज कवितागुन कछु नाहीं। बिनहि उपाय साधु सब गावत फैलत सब जग माहीं ॥३४॥ तेहि ते मन बच काय छाड़ि छल होइ राम अनुरागी । सब सुकर्म सब धर्मन को फल पाय चुक्यौ बड़भागी ॥३५॥ कहत सुनत हरिजस जिन के दृग आँसुन की झर लागी । बीस बिसे तिन कों तुम जानौ येही रामअनुरागी ॥ ३६ ॥ उन-इस सै द्वादस सम्वत में प्राग त्रिबेनी पाहीं । साधु रजायसु पाय नाय सिर रच्यौ ग्रन्थ मन माहीं ॥३७॥ माघ अमा-वस मह अरम्भ करि रामजन्म तिथि काहीं । मिथिला होरीरहस राम को पूरन भो मुद माहीं ॥ ३८ ॥

दोहा—वय भइ छप्पन बरस की, भोगत विषय सिरान ।
बरन्यो होरी रहस यह, रामनाथ परधान ॥ ६ ॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते रामहोरी रहस्य ग्रन्थे षष्ठोऽध्यायः ॥६॥